❀ ॐ नमः शिवाय ❀

* श्री वीरभद्र महात्म्य *



ॐ शङ्करायनमः

वन्दे देव उमापतीं सुरगुरू वन्दे जगदकारणं
वन्दे पन्नग भूषनं मृगधर वन्दे पशूनाँपतीं ।
वन्दे सूर्य शशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकूदं प्रिय
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करं ॥

संरक्षक

तपोनिधी अखाड़ा श्री निरञ्जनी पञ्चायती
मायापुर, हरिद्वार ।

लेखक—
पं० देवराज वेदपाठी
पु० अखाड़ा श्री निरञ्जनी
वीरभद्र महादेव ऋषिकेश, हरिद्वार ।
पो० वीरभद्र ज़ि० देहरादून ।

सम्वत २०२० महा शिवरात्री

❀ श्रीवीरभद्राय नमः ❀

स्कन्द पुराणान्तर्गत केदारखण्डे मायापुरी क्षेत्रे

श्रीवीरभद्र माहात्म्य वर्णन ॥

माया भगवती साक्षात्सृष्टिस्थित्यन्त कारिणी ।
तत्क्षेत्रं हि समाख्यातं भवमुक्ति प्रदायकम् ॥१॥

अर्थ— जो संसार की रचना, स्थिति और संहार करने वाली साक्षात माया भगवती है उनका ही यह क्षेत्र है जो संसार को मुक्ति का देने वाला है।

इसी क्षेत्र में राजा दक्ष प्रजापति ने महा यज्ञ किया और उस यज्ञ में अपने दामाद भगवान् शङ्कर को तथा सती को नहीं बुलाया, जब सती ने आकाश मार्ग से देवताऽदिकों को जाते देखा और सुना कि दक्ष के यहां यज्ञ में जारहे हैं, तब सती ने भगवान् शङ्कर से कहा—

भगवन्परमेशान ह्यम्बरं पर्यलंकृतम् ।
नूनं मम पितुर्गेह वर्तते सुमहोत्सवः ॥२॥
द्रष्टुं तदुत्सवं देव मनोमे त्वदयत्यलम् ।
भगिन्यो मे महादेव भवेयुरागताःखलु ॥३॥
इति मे हृदये देव वर्ततेऽहर्निशं प्रभो ।
देह्याज्ञा मम देवेश यथा यास्यामि तन्नहि ॥४॥

अर्थ—हे भगवन् ! आकाश शोभायमान हो रहा है, इस से प्रतीत होता है कि अवश्य मेरे पिता के घर में सुन्दर महोत्सव है। उस उत्सव को देखने के लिये मेरा मन उत्सुक हो रहा है—

वहां मेरी सब बहिनें भी आई होंगी-उनसे भी मिलूंगी, माता पिता से भी मिलूंगीं। सो हे देव ! मेरे हृदय में इस समय ऐसा होता है। अतः हे देवेश ! मुझे जाने की आज्ञा दीजिये। भगवान शङ्कर ने कहा—

अनाहूता कथं देवी पितुर्गेहे गमः शुभे ।
कथमुत्सहते तेऽद्य निष्ठुरस्य प्रजापते ॥५॥
मुखं विवृण्वते चैव दृष्ट्वा तं गृहमागतम् ।
यस्तु गच्छेदनाहूतो जायते मान नाशनम् ॥६॥

अर्थ—हे देवि ! बिना बुलाये पिता के घर जाने की तुम्हारी इच्छा क्यों हो रही है ? हे शुभे ! प्रजापति की कठोरता तुम से कैसे सही जारही है ?

बिना बुलाये व्यक्ति को घर आया देखकर अहंकारी पुरुष अपने मुँह को बिगाड़ने लगता है और बिना बुलाये जाने पर उसके मान का नाश होजाता है। इस प्रकार समझाने पर भी जब सती नहीं मानी तो भगवान् शङ्कर ने कहा—

देवि गच्छ पितुर्गेहे यदि ते आग्रहः खलु ।
यज्ञस्य दर्शनार्थाय भाव्यस्योत्पत्तिहेतवे ॥७॥

अर्थ—हे देवि ! यदि तुम्हारी हठ ही है तो तुम पिता के घर यज्ञ का दर्शन करने तथा होनहार की उत्पत्ति करने जाओ। शङ्कर ने नन्दि गणादिकों के साथ सति को दक्ष के यहां भेज दिया' वहां किसी ने भी सती का मान नहीं किया-न सति ने अपने स्वामी का कहीं भाग देखा, तो अपमानित तथा दुःखी होकर सति ने योगाग्नि से अपने शरीर को भस्म कर दिया। उस समय सम्पूर्ण देवतादि हा-हाकार करने लगे तथा दक्ष प्रजापति

भी अपनी पुत्री की दशा को देखकर विस्मित हो गये, उधर भगवान् शङ्कर को सति द्वारा देह परित्याग का पता लगा तो वो बड़े क्रोधातुर हुये तथा उन्होंने—

उत्पाट्यच जटां रुद्रो लोकसंहार कारकः ।
त्रोटनाच्च समुद्भूतो वीरभद्रो महायशाः ॥८॥
किं कार्यं भवतः कार्यं शीघ्रमेव वदप्रभो ।
गच्छ वीर महावाहो दक्षयज्ञं विनाशय ॥९॥

अर्थ— भगवान शङ्कर ने क्रोध से जटा उखेड़ं, जटा के टूटने से वीरभद्र पैदा हुये तो वीरभद्र ने शङ्कर से कहा कि महाराज ! किस कार्य के वास्ते मुझे याद किया है ? वो कार्य शीघ्र ही कहिये। तब भगवान शङ्कर ने कहा कि, वीर ! तुम जाओ और दक्ष के यज्ञ को नष्ट करो। इस प्रकार शङ्कर की आज्ञा पाकर तथा एक विशाल सेना को साथ लेकर वीरभद्र गये और यज्ञ को नष्ट किया तथा दक्ष का शिर काटकर अग्नि-कुण्ड में डाल दिया। उस समय सब देवगणादि दुःखित होकर भगवान शङ्कर के पास गये और सब ने शङ्कर की प्रार्थना की, भगवान शङ्कर यज्ञ-भूमि में गये और दक्ष के शिर को निकाल कर बकरे का शिर लगाया तथा यज्ञ को सम्पूर्ण कराया और वहीं कनखल में 'दक्षेश्वर' नाम से प्रसिद्ध हुये।

तब वीरभद्र भी शङ्कर की आज्ञा लेकर इस वन में आये जो कनखल से उत्तर भाग में हैं। यहां नन्दि शिला के मूल में सुनन्दीश्वर महादेव हैं।

ततोऽपि क्रोशमात्रेहि वीरभद्रतपःस्थलम् ।
लक्षवर्ष सहस्त्राणि तन्मय परमं तपः ॥१०॥

गणैश्वर्यं महादेवो वीरभद्राय संददौ ।
शिवकुंडे नरःस्नात्वा सर्व पापै प्रमुच्यते ॥११॥

अर्थ—नन्दी शिला के १ कोस की दूरी पर वीरभद्र की तपोभूमी है जहां लक्ष सहस्त्र वर्ष तक वीरभद्र नें तन्मय होकर तपस्या की। तब ही महादेवजी ने वीरभद्र को अपने गणां का अधीश्वर बनाया, वहीं शिवकुण्ड में मनुष्य स्नान करके सब पापों से छूट जाता है।

वीरभद्रेश्वरो देवो लिंगरूपी सदाशिवः ।
तत्र विल्ववनं विप्र दृष्टं मुक्तिप्रदं भवेत् ॥१२॥
वीरभद्रेश्वरं दृष्ट्वा स्नात्वाच शिवतीर्थके ।
हयमेध फलं विप्र प्राप्नोति परमं पदम् ॥१३॥
निराहारः सप्तरात्रं यो नरोऽत्र शिवाश्रितः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति सत्यमेतन्न संशयः ॥१४॥

अर्थ—सदाशिव महादेवजी लिंगरूपी वीरभद्रेश्वर वहां विराजमान हैं। हे विप्र! विल्ववन में उनके दर्शन करने से मुक्ति प्राप्त होती है वीरभद्र के दर्शन करके तथा शिव तीर्थ में स्नान करने से अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है तथा परम पद की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य यहां सात रात्रि निराहार रहकर शिव के आश्रिय रहता है, वह सब कामनाओं को प्राप्त होता है, यह बात सत्य है इसमें संशय नहीं।

शिवस्य दक्षिणे भागेधारा क्रोशार्ध खंडके ।
तत्र स्नात्वा नरोभक्त्या सूर्यलोकमवाप्नुयात ॥१५॥
तत्रैका सलिला नाम्नी सूरकन्या शिवार्चिका ।

मध्याह्ने नित्यमायाति पूर्णचन्द्रनिभानना ॥१६॥

अर्थ—शिव के दक्षिण भाग में आधे कोस की दूरी पर एक धारा है, मनुष्य वहां स्नान करके सूर्यलोक को प्राप्त होता है तथा वहां एक सलिला नाम की सूरकन्या है वह मध्याह्न में सदा शिव पूजन करने आती है।

ततोऽति निकटे वामे निवर्तन मितेस्थले ।
मुंडमालेश्वरी देवी प्रमथोत्कट शोभनी ॥१७॥
यस्या दर्शनमात्रेण सर्वसिद्धीश्वरो भवेत ।
नाना वाद्यतयाः शब्दाः श्रूयन्ते देवताहृताः ॥१८॥
तस्य दक्षिणतो विप्र शिलापीततमाविल ।
आश्चर्यं दृश्यते तत्र शयनात्पूर्वजन्मयत ॥१९॥
यास्मिन्कुले च योनौच जातपूर्वं तपोनिधे ।
जानाऽतिशयनात्तत्र यदि जीवति मानवः ॥२०॥

अर्थ—वीरभद्र के निकट २१० हाथ की दूरी पर मुँडमालेश्वरी देवी अपने प्रथम गणों सहित वहाँ विराजमान है, जिसके दर्शनमात्र से सिद्धि मिलती है तथा वहाँ पर देवताओं द्वारा बजाये हुये वाद्यों की आवाज सुनाई देती है तथा वहीं दक्षिण भाग में पीतवर्ण की शिला है। वहां शयन करने से पूर्वजन्म का वृतान्त दिखता है। जिस कुल और जिस योनि में पूर्वजन्म हुआ था—यह सब जान सकता है, यदि वहां शयन करने से मनुष्य जीवित रहे।

पुरश्चर्यां च विधिवत्सप्तरात्रं जितेन्द्रियः ।

असाध्य कार्य सप्ताहात्साधयेत्साधकोत्तमः ॥२१॥
परां सिद्धि मवाप्नोति या सुरैरपि दुर्लभा।
विल्वपत्रैः समभ्यर्च्यनभूयः स्तनयोभवेत् ॥२२॥

अर्थ—जो मनुष्य जितेन्द्रिय होकर सात रात्रि पुरश्चरण करता है वह असाध्य कार्यों को भी साध लेता है तथा जो सिद्धि देवताओं को भी दुर्लभ है-उसे प्राप्त करता है और जो विल्वपत्रादि से वीरभद्र की पूजा करता है, वह माता का स्तन पान नहीं करता अर्थात् गर्भ में नही आता।

वीरभद्रेश्वराद्देवात्पश्चिमे योजनार्धके ।
शालिहोत्रेश्वरोदेवो महादेवो वरःप्रदः ॥२३॥
तस्मात्पूर्वे क्रोशपादे नदीरंभाभिधानतः ।
उपस्पृश्यामि पानीयं रंभया सहमोदते ॥२४॥
रंभेश्वरो महादेव स्तत्रैवशिवदायकः ।
ततः परं महाभाग कुब्ज म्रकमितिस्मृतम् ॥२५॥

अर्थ--वीरभद्र के पश्चिम भाग में आधे योजन की दूरी पर शालिहोत्र नाम के महादेव हैं, उनसे पूर्व चौथाई कोस पर रंभा नाम की नदी है और रम्भेश्वर महादेव हैं, उनका दर्शन तथा रम्भा नदी का जल स्पर्श करने मात्र से मनुष्य सुख का भागी होता है। इसके आगे कुब्जाम्र नाम का आम का वृक्ष है जिस पर भगवान् को कुब्ज रूप में बैठे देवतादिकों ने देखा।

सो सज्जनों! वीरभद्र के प्रकट होने का यही स्थान है,व हु पहले यह बड़ा घना जङ्गल था और वीरपुर इसका नाम था शनैः शनैः समय बदलता गया और यह स्थान प्रकट होता गया

महक्मा जङ्गलात ने भी इसका नाम 'वीरभद्र ब्लाक' रखा हुआ है, जिसकी लम्बाई-चौड़ाई अन्दाज़ २ मील के है। यह पुण्य भूमि है, जैसे कि पीछे लिख आये हैं। शिवरात्रि को यहां बड़ा भारी मेला होता है और हजारों नर-नारियां वीरभद्र का पूजन करने आते हैं। यहां का इन्तजाम श्री पञ्च अखाड़ा निरञ्जनी की ओर से बड़ा सुन्दर है-सन्तोषजनक है, यात्रियों के ठहरने का भी प्रवन्ध है। यहां आने के वास्ते ऋषिकेश से भी रास्ता है जो सड़क बनी हुई है तथा वीवीवाला रेलवे स्टेशन से भी सड़क आती है। यात्री लोग कार, तांगा, बाईसिकल, पैदल, बैलगाड़ी द्वारा हर प्रकार से आते हैं आ सकते हैं। एक और खुशी की बात है कि अब यह स्थान जहां कि बड़ा भारी जङ्गल था, वहां वीरभद्र नगर बस रहा है, रेलवे स्टेशन वीरभद्र बन चुका है। हम लोगों का अहोभाग्य है कि जितने पुण्य स्थान इसमे लिखे गये हैं, शायद उन स्थानों का भी पता लग सके तथा प्राणियों का कल्याण हो।

तं धन्याः सर्वलोकेषु ते पूज्याः सर्वदैवतैः।
श्रीशिवेन्यस्तमनसोवसन्त्यत्रनिरामयाः ॥२६॥

अर्थ—जो व्यक्ति विकार शून्य होकर श्रीमहादेवजी में अपने मन को लगाकर यहां निवास करते हैं, वे सब लोगों में धन्य हैं और सब देवताओं के पूज्य हैं।

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

❀ श्रीशिवजी की आरती ❀

जय शिव ओंकारा हरी शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धंगी धारा ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजै ।
हँसासन गरुड़ासन वृषवाहन छाजै ॥

दो भुज चार चतुरभुज दस भुजते सोहै ।
तीनों रूप निरखत त्रिभुवन जग मोहै ॥

अक्षिमाला वनमाला मुण्डमाला धारी ।
त्रिपुरारी असुरारी कर कमला धारी ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अँगे ।
सनकादिक प्रभुतादिक भुतादिक सँगे ॥

लक्ष्मी वर गायत्री पारवती सँगे ।
अरधाँगी अरू त्रिभंगी शिर सोहत गंगे ॥

कर मध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता ।
जग करता जग हरता जग पालन करता ॥

त्रिगुणात्मक शिवजी की आरती जो कोई गावे ।
पढ़त शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे ॥

॥ शिव पञ्चाक्षर स्तोत्र ॥

श्री गणेशायनमः ॥ नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नीत्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥१॥
मन्दाकिनी ललित चन्दन चर्चिताय
नन्दीश्वर प्रमथ नाथ महेश्वराय
मन्दार पुष्प वसुपुष्प सुपूजीताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥२॥
शिवाय गौरी वदनाब्दवृन्द
सुर्याय दक्षाध्वर नाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय बृषध्वजाय
तस्मै शकाराय नमः शिवाय ॥३॥
बसिष्ठ कुम्भोद्भव गोतमाय
मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय ।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥४॥
यक्ष स्वरूपाय जटाधराय
पिनाक हस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥५॥
पञ्चाक्षरदिदं पुण्य यः पठेच्छिव सन्नीधौ ।
शिव लोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं शिव पञ्चाक्षर स्तोत्र समाप्त ॥

मुद्रक —
हिन्दू इलैक्ट्रिक प्रेस
हरिद्वार